नदियों, जलस्रोतों के संरक्षण की आवश्यकता

श्री राजीव नंदन मिश्र 'नन्हें'

सांख्य-दर्शन में तो स्पष्ट रूप से प्रकृति और पुरुष के कारण सृष्टि की उत्पत्ति के क्रम में प्रकृति को हमारी माता माना गया है। वहाँ सूक्ष्म प्रकृति है, लेकिन दिखाई पड़नेवाली स्थूल प्रकृति भी हमें माता के समान पालती-पोसती है। जल रूप 'जीवन' देने के लिए वह कभी गंगा-जैसी नदी बनती है तो कभी जंगलों में वृक्ष के अंदर हम प्यासे लोगों के लिए जल धारण करती है।

सनातन धर्म के अनुसार समस्त ब्रह्माण्ड के प्राणी या समस्त प्रकृति पाँच तत्त्व से मिलकर बना हैं।श्रीरामचरितमानस के अनुसार भगवान् श्री राम ने स्वयं तारा को व्याकुल देखकर उनकी अज्ञानता का नाश करते हुए ज्ञान प्रदान किया। गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है:-

"क्षिति जल पावक गगन समीरा। पञ्च रचित अति अधम शरीरा॥"

अर्थात इस अधम शरीर की रचना क्षिति (पृथ्वी),जल (पानी), पावक (अग्नि), गगन (आकाश) और समीर (वायु) पञ्चतत्त्वों से हुई हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना व्यर्थ हैं। इनमें जल का महत्व हमारे दैनिक जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है। जल हमारे शरीर को आधे से अधिक वजन को बनाता हैं। लगभग हमारे शरीर में जल की मात्रा लगभग 60 प्रतिशत है। पूरी पृथ्वी का एक तिहाई भाग जल ही है। हमारे शास्त्रों में जल के अधिपति अर्थात देवता के रूप में वरुण देव को बताया गया है। वरुण देव की पूजा बड़े श्रद्धा के साथ किया जाता रहा है। पुरातन समय से ही जल के समस्त श्रोत यथा- नदियाँ, तालाब, कुएँ आदि की पूजा प्रचलित रही हैं। समुद्र के देवता, विश्व के नियामक, ऋतु परिवर्तन एवं जिनसे दिन-रात होता है उसके कर्ता-धर्ता के रूप में वरुण देव को बताया गया है। प्राचीन वैदिक धर्म में वरुण देव का स्थान बहुत महत्वपूर्ण था। इन्हें नैतिक शक्ति का महान पोषक माना गया है।

भागवत पुराण के अनुसार वरुण देव के पिता कश्यप ऋषि एवं माता अदिति है। वरुण देव की सवारी मकर अर्थात मगरमच्छ है। पुराणों में वरुणदेव की गिनती दस दिक्पालों में की गई है वे पश्चिम दिशा के अधिपति माने गये है। वरुण देवता ऋतु के संरक्षक के रूप में जाने जाते थे इसलिए इन्हें "ऋतस्य गोप" भी कहा जाता था। पुराणों में वरुण के साथ मित्र का भी उल्लेख कई बार मिलता है। इनदोनो को भाई बताया गया है। इन दोनों को साथ होने से एक शब्द में मित्रावरुण' कहा गया है। वरुणदेव जहाँ सागर के ऊपरी क्षेत्रों, नदियों एवं तटरेखा पर शासन करते हैं तो वही मित्र सागर आदि के गहराइयों से सम्बन्धत है। स्कन्दपुराण में बताया गया है काशी स्थित मित्रावरुण नामक दो शिवलिंगों की पूजा करने से मित्रलोक एवं वरुणलोक की प्राप्ति होती है।

हमारा इतिहास गवाह है कि संसार के सभी सभ्यताओं का उद्भव एवं विकास नदियों के किनारे ही हुआ है। कहने का तात्पर्य यह है जीवन-यापन में जल की अहम भूमिका है। कोई भी मनुष्य को पीने के लिए जल,खेती के लिए जल,पालक-पशुओं के लिए जल दूर ले जाना मुश्किल था। तब आज इतनी सुविधाएँ भी नहीं थी इस कारण लोग नदियों के किनारे रहते थे। धीरे-धीरे लोगों का एक समूह

युवा कवि व लेखक, ग्राम व पोस्ट-सरना, थाना-शाहपुर,जिला-भोजपुर, बिहार-802165, मो.-7004235870, Email-mrrajeevnandan@gmail.com

बन जाता था। यही बढ़ते बढ़ते गाँव-नगर आदि का रूप ले लेता था। फिर जिस जगह रहे अपनी सभ्यता बन जाती थी। प्राचीन सभ्यता सिंधु घाटी, मेसोपोटामिया की सभ्यता आदि सभी नदियों किनारे ही पली-बढ़ी। सुमेरियन सभ्यता जिसे प्राचीन में मेसोपोटामिया कहा जाता था जो अब आधुनिक इराक है। वहाँ जल के देव को 'एनकी' कहा जाता था। कुछ इतिहासकारों के अनुसार मोहन जोदड़ों का "महान स्नानगृह" इस बात का एक अद्भुत प्रमाण है की जल का काफ़ी महत्व था एवं इस टैंक का उपयोग विशेष धार्मिक अनुष्ठानों के लिए किया गया था। इसे विद्वानों द्वारा "प्राचीन विश्व का सबसे पुराना सार्वजनिक जल टैंक" के रूप में माना जाता है। बेबिलोनियन सभयता के अनुसार वहाँ के लोग भी जल देव की पूजा करते थे। मिस्र के लोग नील नदी, पृथ्वी और हरियाली तीनों की मिली-जुली शक्तियों का प्रतीक ओसिर (ओसाइरिस) नाम से जल देवता का पूजन करते थे। ग्रीक के लोग पोसाइडन/ पोसाइडान को जल एवं समुन्द्र देवता मानते थे। वरुण ही पारसी पंथ में "अहुरामज़्दा" कहलाए। रोमन पौराणिक कथाओं में नेप्च्यून एक देवता हैं, जिन्हें ताजे पानी और समुद्र का अन्तम अधिकार माना जाता था। जैन धर्म के लोग तो पानी को जीव मानते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समस्त प्राचीनकाल में विकसित सभी सभ्यताओं में जल का पूजन होता था। विभिन्न धर्मों के लोग प्राचीन समय से ही जल का पूजन करते रहे हैं। सर्वप्राचीन वेद ऋग्वेद के मित्र और वरुण के साथ "आप" भी प्राप्त होता है जिसका अर्थ जल होता है। वरुण देव की पूजा ज्येष्ठ माह में की जाती है। वरुण देव की पूजा गंगा की पूजा के साथ होती है। इनके पूजन से सभी रोगों का नाश, मनोकामनाओं की पूर्ती तथा दुखों का नाश होता है।

गंगा दशहरा का पर्व

गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी इन सात नदियों को सांस्कृतिक आधार पर महत्वपूर्ण माना गया हैं परंतु समस्त ब्रह्माण्ड में गंगा नदी जैसा पवित्र जल किसी अन्य नदी का नहीं है। प्रत्येक वर्ष हम सभी देवी गंगा का पूजन बड़े उत्साह के साथ करते है।

पृथ्वी पर गंगा का आगमन ज्येष्ठ मास के दशमी तिथि को हुआ था। यह दिन स्वर्ग से पृथ्वी पर माँ गंगा का आगमन का दिन है। इसी कारण इसे गंगा दशहरा के रूप में मनाया जाता है। इस दिन श्रद्धालु विशेष रूप से गंगा में डुबकी लगाते है। उसके बाद पूजन एवं दान करते है। हालांकि इस वर्ष 2021 में कोरोना महामारी के कारण ढेरों श्रद्धालुओं को गंगा-स्नान से वंचित रहना पड़ जायेगा। परन्तु घर पर ही स्नान के जल में गंगाजल मिलाकर स्नान करना चहिए। हमारे शास्त्रों में गंगा की इतनी महता बतायी गयी है कि गंगा का एक बूंद जल अगर सामान्य जल से मिल जाता है तो वो सारा सामान्य जल गंगा जैसा पवित्र हो जाता है। वैसे तो यह भी सत्य है कि गंगा नाम के श्रद्धापूर्वक स्मरण मात्र से भी मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते हैं।इस दिन गंगा स्नान-पूजन से कई जन्मों का पाप नष्ट हो जाता है। पुण्य का उदय होता है। घर में सुख,शान्ति,समृद्धि का वास होता है।जो जिस इष्ट कामना से गंगा दशहरा के दिन सच्चे मन से स्नानादि करता है उसकी समस्त कामनाएँ शीघ्र पूर्ण हो जाती है। माँ गंगा का स्वरूप अपने चित में धारण करना शुभ फलदायी है।

इनके तीन नेत्र है,चार भुजाएँ है चारों भुजा दिव्य कलश, श्वेतकमल, वरद और अभय से सुशोभित हैं।देवी श्वेत वस्त्र धारण की है।सौम्य एवं सुरम्य है। मुक्तामणियों से विभूषित है।तीनों लोकों में पूजित एवं प्रतिष्ठित है।आशीष से पापों का नाश कर पुण्य का उदय करने वाली देवी के मुखमण्डल पर प्रसन्नता है। माँ की सवारी मकर (मगरमच्छ) हैं। ऐसी पापनाशिनी देवी को बारम्बार नमस्कार है।

देवी गंगा का एक पवित्र मन्त्र है- '**ॐ नमो भगवति हिलि हिलि मिलि मिलि गंगे माँ पावय पावय स्वाहा'।** जिसका अर्थ है -हे भगवती गंगे!मुझे बार-बार मिलिए अपनी कृपा से पवित्र कीजिये, पवित्र कीजिये।

गंगा नदी की सफाई का भी हमें अपने जीवन में ध्यान रखना चाहिए।उनकी निर्मलता को बचाये रखना हमारा कर्तव्य है। अगर साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखते तो स्नान-पूजनादि किस काम का? गंगा है तो निर्मलता है, गंगा है तो भारत की

श्रेष्ठता है। गंगा से ही हर तीर्थ है। गंगा ही ऋषि-महर्षियों का विश्वास है। स्वयं श्री कृष्णजी ने गीता में कहा है नदियों में मैं स्वयं श्री भागीरथी गंगाजी हूँ। वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि सभी धार्मिक ग्रंथों में गंगा की महिमा प्राप्त होता है। समस्त पूजन कर्म, यज्ञादि में गंगा जल का प्रयोग होता है।

स्कन्दपुराण में एक श्लोक प्राप्त होता है-

स्नानकालेऽश्रन्यतीर्थेषु जप्यते जाह्नवी जनैः। विना विष्णुपदीं कान्यत् समर्था ह्यघशोधने॥

अर्थात् अन्य तीर्थों में स्नान करते समय भी गंगा का नाम ही लोग जपा करते हैं, गंगा के बिना अन्य पाप धोने में कौन समर्थ है?

हमारा विज्ञान भी गंगा के जल की गुणवत्ता को स्वीकार करता है। वैज्ञानिको के अनुसार गंगा में बैक्टीरिया को मारने की क्षमता है। बीमारी पैदा करने वाले जीवाणुओं को भी नष्ट करता है। गंगा का जल लंबे समय तक बन्द रखने के बाद भी सड़ता नही हैं। इतिहासकारों ने लिखा है कि भारत जब गुलाम था उस समय अंग्रेज़ कलकत्ता से इंग्लैंड जाने के क्रम में पीने के लिए जहाज में गंगा का पानी ले जाते थे वह सड़ता नहीं था जबकि अन्य पानी सड़ जाता था। वे जो पानी इंग्लैंड से भारत आने के क्रम में प्रयोग करते थे वह रास्ते में ही सड़ जाता था। इतिहासकारों के अनुसार अकबर सम्पूर्ण जीवन जल के रूप में गंगा का ही पान करता रहा। अकबर के महल से गंगा नदी काफी दूर थी इसलिए उसने केवल गंगाजल लाने के लिए सैनिकों की अलग एक टुकड़ी नियुक्त कर रखी थी। रुमर गौडेन अपनी पुस्तक 'गुलबदन' में लिखे है कि अकबर गंगा के पानी के अलावा कहीं और का पानी नहीं पीते थे। नदी दूर होने के बावजूद उनके सेवक अपने बादशाह के लिए गंगाजल लाया करते थे। गंगा में बहुत से उपयोगी खनिज व तत्त्व भी मिलते है।

राष्ट्रीय लब्ध प्रतिष्ठित कवि श्री नरसिंह नारायण पाण्डेय "चञ्चल बलरामपुरी" (अयोध्या,उत्तरप्रदेश) ने गङ्गा माँ का 52 छन्दों में विशद वर्णन किया है जिसमे से एक छन्द द्रष्टव्य है-

विष्णु-पदाम्बुज की मकरन्द, अमन्द-अनन्द तरङ्गित गङ्गा !
ब्रह्म-कमण्डल की उद्भूत, प्रभा-अभिभूत उमङ्गित गङ्गा !!
पाप के ताप की शाप निवारक, पावन-पुण्य-सुरञ्जित गङ्गा !
नन्दन की अभिनन्दिका चारु, सुचन्दन चर्चित वन्दित-गङ्गा!!

ऋग्वेद में कहा गया है- **'अप्सु अन्तः अमृतं, अप्सु भेषजम्'।**

अर्थात् जल में अमृत है। इसमें औषधि गुण हैं। ऐसे में जरूरत है जल की शुद्धता को बनाए रखना।

जल देनेवाला अद्भुत वृक्ष

हमारी प्रकृति ने हमें उपहारस्वरूप बहुत कुछ दिया है। बहुत तो ऐसे भी प्रदत्त उपहार है जिसकी हमें जानकारी ही नहीं पर शोध एवं खोज के आधार पर नवीन जानकारियाँ हम सभी को प्राप्त होती है।

हमारी पृथ्वी पर अनेक वृक्ष है जो प्राणिजगत के लिए बहुत आवश्यक है। हम सभी जानते है इनसे हमें आक्सीजन जैसे बहुमूल्य जीवन रत्न प्राप्त हो पाता है। वृक्षों से लकड़ियाँ, फल,फूल और छांव देकर इंसानों की आवश्यकताओं को पूरा करते है। पीपल, आम, नीम, शीशम, बरगद अन्य इसके उदाहरण स्वरूप है।

इन सबके बावजूद एक पेड़ ऐसा भी है जो हमे जल प्रदान करता है। यह पानी पीने लायक होता है इससे थोड़ा नहीं बल्कि इतना पानी मिलता है कि लोग इसे पीकर अपना प्यास बुझा सकते है। जिस प्रकार हमारे घरों में नल खोलने पर पानी निकलता है ठीक उसी प्रकार इसपर कट लगाने से इससे पानी प्राप्त होता है। सुनकर थोड़ा आश्चर्य जरूर लग रहा पर यह सत्य है।इस पेड़ का नाम आसन है।आसन वृक्ष के कई अन्य भी नाम है-असना, साज।विज्ञान की भाषा में इसे "Terminalia Tomentosa" कहते हैं। इस वृक्ष के तने पर जब कट लगाया जाता है तो पानी की धार निकलती है।

सभी पौधे पानी को अपनी जड़ में बाँध कर रखते हैं पर यह अपने तने में पानी भरकर रखता है। इस पेड़ को मगरमच्छ का पीठ वाला पेड़ भी कहा जाता है क्योंकि इस पेड़ की छाल बहुत मोटी होती है। यह बृहद आकार का पर्णपाती लम्बा तथा सीधा वृक्ष होता हैं। यह पेड़ दक्षिण भारत में पाया जाता है। तमिलनाडु के जंगलों में ये ज्यादा मिलते है।इसकी औसत ऊँचाई लगभग 30 से 35 मीटर तक होती है। इसे भिन्न-भिन्न भूमि पर उपजाया जा सकता है परंतु जलोढ़ व गहरी भूमि में यह अपने सही आकार को प्राप्त करता है अर्थात जलोढ़ मिट्टी में इसको उपजाना सर्वोत्तम हैं। भारत के बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, ये पेड़ पौधे के तने के अनुपात में एक निश्चित मात्रा में पानी जमा करते हैं।

ऐसे ही हमारी प्रकृति असंख्य सम्पदाओं को हमसभी को उपहारस्वरूप प्रदान की है। हमें प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करना या उसके विपरीत चलना हमसब के लिए खतरे की घंटी है। हम सभी को भविष्य के लिए सजग रहना होगा। प्रकृति से छेड़छाड़ का ही नतीजा है कि कई क्षेत्रों में जल का अभाव हो गया है। लोग जल के लिए तरस रहे है।

रहिमन "पानी" राखिए, बिन "पानी" सब सून। "पानी" गए न ऊबरे मोती मानुष चून।।

सैकड़ो वर्ष पुराना यह दोहा रहिमजी का है जिसे कक्षाओं में पढ़ाया जाता रहा है। भले ही यह दोहा नीतिवाद से प्रेरित रहा है लेकिन आज यह सच साबित होते दिख रहा हैं।

चिपको आन्दोलन के प्रणेता सुन्दर लाल बहुगुणा* ने पेड़ों को बचाने के लिए आन्दोलन किये। पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा ने पानी संकट को लेकर सजग करते हुए कहा है कि अगला विश्वयुद्ध पानी को लेकर लड़ा जा सकता है। जल की इस समस्या से बचने के लिए हम सभी को जल संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए। जल संरक्षण का अर्थ है जल के प्रयोग को घटाना एवं सफाई, निर्माण एवं कृषि आदि के लिए अवशिष्ट जल का पुनश्चक्रण अर्थात् उनका पुनः उपयोग। भू-जल स्तर की गिरावट को बचाने उसमें सुधार के लिए भूमि में वर्षा जल का संचय करना चाहिए।वर्षा ऋतु में जल संचयन और छोटे तालाबों में भंडारण करना चाहिए। ये जल गर्मियों के दौरान खेतों में पानी की आपूर्ति में हमारे मददगार साबित होंगे। नदियों, तालाबों, अथवा समुद्र में कूड़ा नहीं फेंकना चाहिए एवं फैक्ट्री से निकले अपशिष्ट कचरे को नदियों में जाने से रोकना चाहिए। आइए हम सभी मिलकर जल पूजन के साथ-साथ गंगादि नदियों, तालाबों आदि जलस्रोतों के साफ-सफाई बनाये रखे एवं संरक्षण में स्वयं के कल्याण के लिए स्वयं का योगदान सुनिश्चित करें।

पतितपावनी पापनाशिनी पावन जल तव हे गंगे!
धरा सुशस्य सुरम्य बनाती निर्मल-ललित तरंगे!
दिव्य-कलश श्वेताम्बुज शोभित "मकरासन" संगे!
"माँ" भव सागर पार उतारे, प्रणत-प्राणि स्वर "हर हर गंगे"!!

***

*अत्यन्त शोक का विषय है कि इसी मास दिनांक 21 मई, 2021 को उनका निधन हो गया है। श्रद्धांञ्जलि!- सम्पादक